ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

"उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक - आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

डॉ. सरिता गोयल
सहायक प्राध्यपक (वाणिज्य विभाग)
संत अलॉयसियस (स्वशासी) महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)
E-mail: goelsaritaa@gmail.com

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओ की आर्थिक-सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया हैं। अध्ययन क्षेत्र मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग में सन् 1991 से शासकीय क्षेत्र में स्थायी शैक्षणिक व अशैक्षणिक कर्मचारियो की भर्ती नही हुई है। रिक्त पदो पर संविदा नियुक्ति के द्वारा शैक्षणिक कार्यो का संचालन किया जा रहा हैं। इस पद पर कार्यरत महिलायें भी कई समस्याओ का सामना कर रही है। अत: अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश राज्य के जबलपुर व डिन्डोरी जिले के विश्वविद्यालय व महाविद्यालय के महिला सहायक प्राध्यापकों के समग्र में से 135 कार्यरत महिलओं का चयन दैव निर्दशन विधि के द्वारा किया गया हैं। शोधकर्ता द्वारा संकलित प्रदत्तो के विश्लेषण के संदर्भ में माध्य, मानक विचलन व काई वर्ग परिक्षण की गणना की गई व निष्कर्ष निकाले गए है।

मुख्य शब्द – उच्च शिक्षा क्षेत्र, कार्यरत महिलाएं, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक स्वतंत्रता

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

"उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक - आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

"जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता तब तक विश्व का कल्याण संभव नहीं है। किसी चिड़िया के लिये एक पंख से उड़ना संभव नहीं है"।

- स्वामी विवेकानंद

प्रस्तावना:

आज विश्व में उच्च शिक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा आर्थिक उन्नति का सोपान है मानव संसाधन के रुप में महिलाओ को संबल बनाना आधुनिक युग की सशक्त मांग हैं महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक स्वतंत्रता से परिचित होना आवश्यक हैं। । महिला एक मानव के रुप में और एक संसाधन के रुप में अपने परंपरागत परिवेश के बीच अपने अस्तित्व को खोजना चाहती है तथा अपने आर्थिक महत्व को स्थापित करना चाहती है। यहाँ महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता से अभिप्राय है कि महिलाओं की आर्थिक-सामाजिक दशा ऐसी होनी चाहिए, जिससे वह स्वाभिमान के साथ बिना कष्ट के अपना और अपने परिवार के जीवन का निर्वाह कर सके ।

शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलायें अपने आप को सबसे ज्यादा सुरक्षित महसूस करती है तथा घर एवं नौकरी दोनों में सामजस्य स्थापित कर लेती है। अगर सरकार उनके वेतन ,स्वास्थ्य, अवकाश, पदोन्नति, सुरक्षित रोजगार के लिए नीतियाँ अनिवार्य करती है तो महिलाओं की आर्थिक -सामाजिक स्थिति तनाव रहित व सुदृढ रहेगी । प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग में सन् 1991 से शासकीय क्षेत्र में स्थायी शैक्षणिक व अशैक्षणिक कर्मचारियो की भर्ती नही हुई है। रिक्त पदो पर संविदा नियुक्ति के द्वारा शैक्षणिक कार्यो का संचालन किया जा रहा हैं। इस पद पर कार्यरत महिलायें भी कई समस्याओ का सामना कर रही है। असभ्य एवं सभ्य समाज के बीच यदि महिला के प्रति दृष्टिकोणों में परिवर्तन नहीं लाया जाएगा तो महिला की आर्थिक स्थिति सशक्त होते हुये भी चिंतित व परेशान रहेगी। इसलिये पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश में कन्या, युवती, स्त्री के प्रति सोच में मनोवैज्ञानिक बदलाव अत्यंत आवश्यक है। महिलाओं के व्यक्तिगत अस्तित्व ,पारिवारिक अस्तित्व एवं सामाजिक अस्तित्व को नये रुप में पारिभाषित करना होगा जिसमे उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

साहित्य पुनरावलोकन:

शर्मा कनिका (2019) - प्रस्तुत शोध पत्र **"व्यवसायिक शिक्षण के अंतर्गत कार्य - जीवन संतुलन पर अध्ययन (महिला शिक्षकों के विशेष संदर्भ में)"** के अंतर्गत लेखिका ने महिला शिक्षकों के कार्य-जीवन संतुलन को जानने का प्रयास किया है उनका मानना है कि महिला कर्मचारियों के बीच कार्य जीवन संतुलन का प्रबंधन विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न होता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि कार्यस्थल और परिवार में नियोजित महिलाओं द्वारा रणनीतियों को लागू करने की कला सीखने के लिए, कार्य जीवन संतुलन का

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

प्रबंधन करने में सक्षम होना पूरी तरह से परिस्थितियों पर निर्भर करता है। प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन का निष्कर्ष है कि कामकाजी महिलाओं के कार्य जीवन की गुणवत्ता को ,कार्य जीवन संतुलन प्रथाओं का पालन करके बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा, महिला शिक्षकों के बीच काम की संतुष्टि भी स्वस्थ कार्य जीवन संतुलन के माध्यम से काम को प्राथमिकता देकर प्राप्त की जा सकती है।

शुक्ला डॉ. सुनीता (2019) - प्रस्तुत शोध पत्र **"कार्यरत महिलाओं के पारिवारिक जीवन का अध्ययन"** के अंतर्गत लेखिका को यह पता चला कि महिलाऐं अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहीं है |शिक्षा के प्रभाव के कारण सामाजिक मूल्यों व पारिवारिक परंपराओं में परिवर्तन देखने में आया है |कार्यरत महिलाओं की मां के रूप में सामाजिक स्थिति एवं विभिन्न भूमिकाओं का मूल्यांकन करने से ज्ञात होता है कि बच्चों के पालन पोषण का उत्तरदायित्व माँ का ही है | पारिवारिक निर्णय लेने में महिलाएं अहम भूमिका निभा रही हैं। महिलाए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं एवं सभी सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों का संचालन पूर्ण रूप से कर रही हैं । यह सामाजिक परिवर्तन की ओर नई दिशा का संकेत है |

गायत्री (2019) - शोध पत्र **"पंचायती राज प्रणाली में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका"** शीर्षक के अंर्तगत एक तिहाई व कुछ राज्यों में 50 प्रतिशत तक आरक्षण व्यवस्था के उपरांत महिलाओं ने पंचायतो में अपनी भूमिका का निर्वाह किस प्रकार किया, इसका वर्णन स्वास्थ्य, जनसंख्या नियत्रंण, शिक्षा प्रौद्यौगिकी आदि में प्रस्तुत किया तथा नकारात्मक पहलुओ को देखते हुये सुझाव प्रस्तुत करते हुए निष्कर्ष के रूप में बताया कि आज पंचायती राज प्रणाली में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर रही हैं।

शर्मा डॉ अर्चना (2018) - प्रस्तुत शोध पत्र **"महिला सशक्तिकरण का आर्थिक और सामाजिक पहलू"** आज के आर्थिक युग में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलायें अधिक स्वावलंबी व आत्मर्निभर हुई है । वर्ष 2014 में आठ महिला प्रोत्साहन पुरूस्कार तथा 8 मार्च 2017 को राष्ट्रपति द्वारा 33 महिलाओं और संगठनों को नारी शक्ति पुरूस्कार 2016 से सम्मानित किया गया । इस के तहत एक लाख रूपये की राशि प्रदान की गई है।

स्कॉटिश ट्रेड्स यूनियन (2016) - प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन का शीर्षक **"शिक्षा क्षेत्र के शिक्षण और अन्य अकादमिक में कार्य करने वाली महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाली चुनोतियाँ"** इस प्रतिवेदन में शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं का वर्णन किया गया है तथा महिला कार्यबल की शर्तें, वेतन और कैरियर की संभावनाएं पर प्रकाश डाला। महिलाओं के स्वास्थ्य कार्यभार, आकस्मिक रोजगार में कार्य करने वाली महिलाओं की समस्याओं को संबोधित किया तथा स्कॉटिश सरकार को इन समस्याओं से अवगत कराकर एक सफल निति का निर्माण करने का सुझाव दिया।

अतः स्पष्ट है कि भारतीय महिलायें अब केवल सजावट की वस्तु न रहकर, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी साख बना रहीं है तथा घर एवं बाहर दोनों में सामंजस्य करके कुशलता पूर्वक भारतीय नारी की भूमिका निभा रहीं है। लेकिन कार्यरत महिलायें आज भी कई समस्याओ का सामना कर रहीं है।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

अध्ययन की आवश्यकता:

कामकाजी महिलायें विषय बहुत स्थूल है। ऐसे वर्ग का उदय व विकास इसलिए नहीं हुआ क्योंकि पुरुष प्रधान समाज में उसकी स्थिति संघर्ष पूर्ण है बल्कि इसलिये हुआ क्योंकि महिलायें अपने अधिकारो के प्रति जागरुक व सजग हुई हैं। वर्तमान में महिलाओं को हर क्षेत्र में रोजगार तो मिल रहा है लेकिन क्या यह रोजगार उनके परिवार के भरण पोषण के लिए पर्याप्त है? क्या महिलाओं को समान कार्य का समान वेतन प्राप्त हो रहा है? क्या कार्यरत महिलाओं को स्वयं की आय पर अधिकार प्राप्त है? ऐसे कई प्रश्न मस्तिष्क पटल पर दखल देते रहते है। उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के कार्य से उनकी आर्थिक स्थिति में कितना बदलाव आया आदि प्रश्नों के उत्तर जानने की दृष्टि से शोध कार्य "मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय को चयनित किया गया है।

शोध उद्देश्य:

- उच्च शिक्षा क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
- कार्यरत महिलाओं की स्वयं की आय पर अधिकार को ज्ञात करना।
- कार्यरत महिलाओं की समस्या से अवगत होना।

शोध उपकल्पना:

- उच्च शिक्षा संस्थान में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति समान है।
- उच्च शिक्षा संस्थान में कार्यरत महिलाओं को स्वंय की आय पर अधिकार प्राप्त है।

अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्द:

शोधकर्ता द्वारा सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् मुख्य शब्दों को संक्रियात्मक रूप से परिभाषित किया गया हैं –

- **उच्च शिक्षा क्षेत्र** - मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालय, अशासकीय महाविद्यालय व विश्वविद्यालय से हैं ।
- **कार्यरत महिलाऐं** - उच्च शिक्षा क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में शासकीय महाविद्यालय / विश्वविद्यालय में संविदा के शैक्षणिक पद पर एवं अशासकीय महाविद्यालय / विश्वविद्यालय में शैक्षणिक पद पर कार्यरत महिलाओं से है।
- **आर्थिक स्वतंत्रता** - आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ है आर्थिक सुरक्षा। समाज के विभिन्न परिवेश में महिलायें विभिन्न कार्यों का संपादन करती है तथा उनको स्वयं की आय पर अधिकार प्राप्त है।
- **सामाजिक स्वतन्त्रता** - सामाजिक स्वतन्त्रता का अर्थ है कि समाज में धर्म, जाति, प्रजाति, लिंग, जन्म स्थान, भाषा या अन्य किसी प्रकार से व्यक्तियों में कोई भेद – भाव नहीं किया

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

जाता है। इसका अभिप्राय है की किसी के भी साथ कोई भेदभाव नहीं करना अर्थात सभी को विकास के समान अवसर प्राप्त हों।

शोधप्राविधि :

अध्यन की प्रकृति – प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है।

अध्ययन का क्षेत्र व न्यादर्श – मध्यप्रदेश राज्य के उच्च शिक्षा क्षेत्र के जबलपुर जिले के शहरी क्षेत्र से दैव निदर्शन विधि के द्वारा सहायक प्राध्यापको से प्राथमिक समंको को एकत्रित किया है तथा डिंडोरी 120 सहायक प्राध्यापको से प्राथमिक 15 शहरी क्षेत्र से दैव निदर्शन विधि के द्वारा जिले के समंको को एकत्रित किया गया है।

सांख्यिकीय प्राविधि – प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकीय प्राविधि के रूप में माध्यप्रमाप विचलन व , काई वर्ग परिक्षण का प्रयोग किया गया है।

समंको का विश्लेषण व परिणाम - अनुसंधान कार्य में समंकों के संग्रह करने के पश्चात् सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करते हुए समंको का विश्लेषण व व्याख्या करने से प्राप्त निष्कर्षों को निम्न रूप से प्रस्तुत किया गया हैं।

परिकल्पना क्रमांक – 1: उच्च शिक्षा संस्थान में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति समान है।

क्षेत्र	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	स्वातंत्रय संख्या d. f.	तालिका मान	$\chi 2$ का मान	सार्थकता का स्तर
शासकीय क्षेत्र	50	19600	5126	3	7.815	25.912	सार्थकता का 0.05 स्तर पर अन्तर है
अशासकीय क्षेत्र	85	11276	8571				

परिकल्पना क्रमांक – 1 से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को प्राप्त होने वाले वेतन में दोनों समूहों के प्राप्त माध्य क्रमशः 19600 तथा 11276 का विश्लेषण करने पर प्रमाप विचलन का मान 5126 व 8571 है तथा काई वर्ग परीक्षण का मान 25.912 है जो स्वातंत्रय संख्या 3 के लिये 0.05 के सार्थकता स्तर के मानो से बहुत अधिक है इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त होती है शासकीय व अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के वेतन में बहुत अंतर है । अतः अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत शासकीय क्षेत्र से कम है ।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

परिकल्पना क्रमांक – 2: उच्च शिक्षा संस्थान में कार्यरत महिलाओं को स्वंय की आय पर अधिकार प्राप्त है।

क्षेत्र	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	स्वातंत्रय संख्या d. f.	तालिका मान	$\chi 2$ का मान	सार्थकता का स्तर
शासकीय क्षेत्र	50	25	20	1	3.841	.0835	सार्थकता का 0.05 स्तर पर अन्तर कम है
अशासकीय क्षेत्र	85	42.5	35.5				

परिकल्पना क्रमांक – 2 से स्पष्ट है कि शासकीय क्षेत्र व अशासकीय क्षेत्र में में कार्यरत महिलाओं को स्वयं की आय को खर्च करने की स्वतंत्रता का प्राप्त माध्य क्रमश: 25 व 42.5 का विश्लेषण करने पर प्रमाप विचलन का मान 20 व 35.5 है तथा काई वर्ग परीक्षण का मान .0835 है जो स्वातंत्रय संख्या 1 के लिये 0.05 के सार्थकता स्तर के मानो से बहुत कम है इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार होती है अर्थात उच्च शिक्षा क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को स्वयं की आय को खर्च करने की स्वतंत्रता है।

कामकाजी महिलाओं की प्रमुख समस्यायें :

भारतीय समाज में महिला हमेशा से ही अपेक्षाओं की पुंज रही है चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र में हो या शहरी, चाहे वह माँ के रुप में हो या बहन या पत्नी, हर रुप में अपेक्षायें छुपी रहती है और यदि वह कार्यरत है तो और कई वर्गो की अपेक्षायें उससे जुड़ जाती है। इन अपेक्षओं से ही महिलाओं के लिए विभिन्न समस्याओं का जन्म शुरु हो जाता है। कामकाजी महिलाओं की प्रमुख समस्यायें निम्नलिखित है -

- सर्वेक्षित महिलाओं में अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं का मानना है कि उन्हें उचित वेतन/पारिश्रमिक प्राप्त नहीं हो रहा है। कार्यरत 85 महिलाओं में से 59 प्रतिशत महिलाओं को मासिक वेतन 10,000 रु. से कम प्राप्त हो रहा है। जो कि द्वितीय श्रेणी पद पर कार्यरत है।

- सर्वेक्षित महिलाओं में शासकीय क्षेत्र में अतिथि विद्वान / जनभागीदारी पद पर कार्यरत महिलाओं को अवकाश एवं स्वास्थ्य संबंधी छूटे प्राप्त नहीं होती है।

- सर्वेक्षित महिलाओं का कहना है कि अतिरिक्त कार्य करने पर उन्हें अतिरिक्त कार्य का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

- अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं से यह ज्ञात हुआ कि उन्हें किसी भी प्रकार की पदोन्नति प्रदान नहीं की जाती है तथा बार-बार निवेदन करने पर उनके कार्य को देखते हुये वेतन में मामूली वृद्धि की जाती है।

- सर्वेक्षित महिलाओं में शासकीय क्षेत्र में अतिथि विद्वान / जनभागीदारी पद पर कार्यरत महिलाओं को किसी भी प्रकार की पदोन्नति व वेतन में वृद्धि नहीं की जाती है।

- जब घर का वातावरण संतुलित नहीं होता है, तो कार्यालय में भी कार्य उचित ढंग से नहीं कर पाते है, जिससे मानसिक तनावों से होकर गुजरना पड़ता है।

- दोहरी भूमिका मे उन्हें पति व परिवार के अन्य सदस्यों से सहयोग कम प्राप्त होता है। जिसके कारण कभी-कभी दांपत्य संबंधों में टकराव की स्थिति निर्मित हो जाती है।

निष्कर्ष:

शोध विषय पर अध्ययन करने के पश्चात् प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि उच्च शिक्षा के शासकीय क्षेत्र में अतिथि विद्वान / जनभागीदारी पद पर व अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति में बहुत कम अन्तर है क्योंकि दोनों क्षेत्र में महिलाऐं कई समस्याओं का सामना कर रहीं हैं। अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में कार्यरत व्यक्ति तभी संतुष्ट रह सकते है जब वहाँ बनाई गई नीतियों व नियमों को एक समान रुप से लागू किया जाये तथा उच्च स्तर से लेकर निम्न स्तर तक कार्यो का अविलंब क्रियान्वयन हो। समुचित क्रियान्वयन ही एक ऐसा माध्यम है जिससे इस क्षेत्र में व्यापक सुधार किये जा सकते है।उच्च शिक्षा क्षेत्र की नीतियों का प्रभाव उनकी आर्थिक स्थिति के साथ - साथ उनके कार्यालयीन परिवेश, पारिवारिक परिवेश, सामाजिक परिवेश व कार्य को भी प्रभावित करता है।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

संदर्भ सूची:

पुस्तके :

- शर्मा, श्रीमती नीलमणि: "आधे भारत का संघर्ष", संजीव प्रकाशन, नई दिल्ली 2010
- शुक्ला, डॉ. एस.एम., मिश्रा, डॉ. जे. पी.: "अर्थशास्त्र", साहित्य भवन पब्लिकेशनस, आगरा, 2010
- शर्मा, प्रेम नारायण और अन्य: "महिला सशक्तिकरण एवं समग्र विकास", भारत बुक सेंटर, लखनऊ, 2008
- मनीषा: "हम सभ्य औरतें", समायिक प्रकाशन, 2009
- राय, पारसनाथ: "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2011
- सलूजा, शीला; सलूजा, चुन्नीलाल: "कामकाजी महिलायें समस्या एवं समाधान", पुस्तक महल, 2001
- सलूजा, शीला; सलूजा चुन्नीलाल: "भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति", शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2008

रिपोर्ट एवं जर्नल:

- Sharma, Kanika: "A Study On Work - Life Balance Among Teaching Professionals With Special Reference To Women Teachers" International Journal of Advanced Research in Commerce, Management & Social Science (IJARCMSS), ISSN: 2581-7930, GIF: 0.9063, CIF: 2.965, Volume 02, Number 04, October - December, 2019, Page: 31 - 33.
- Shukla, Dr. Sunita: "Journal of education in twenty first century" A peer reviewed / refereed journal An International Journal of education & Humanities, ISSN: 2394-7845, Volume – VI, Number–1, December 2019, APH Publishing Corporation, Page: 115 - 117.
- Saxena, Meera; Rani: "Life of Satisfaction and Perceived Happiness as Function of Family Structure and Employment of Women", www.psycinfo.com, Volume 27 (1), January 1996, Page: 41 - 46
- गायत्री: "पंचायती राज प्रणाली में महिला जन प्रतिनिधियों की भूमिका", Remarking - An Analisation, ISSN: 2394-0344, Volume – 3, Issue 10, January 2019, Page: 20 - 24

वेबसाइट:

- http://economictimes.indiatimes.com
- https://www.catalyst.org
- https://www.ugc.ac.in

Copyright @ 2020 Authors